विश्व पर्यावरण दिवस विशेषांक-2014

एनविस न्यूज लेटर

छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल

वर्ष - 2014 अंक-15 हमारा संकल्प-स्वच्छ पर्यावरण जून, 2014

संपादकीय

पर्यावरण संरक्षण में जन भागीदारी आवश्यक

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर न्यूज लेटर के इस विशेष अंक के प्रकाशन पर मुझे हर्ष हो रहा है। न्यूज लेटर का यह 15 वां अंक है। इस दौरान पर्यावरण संरक्षण की दिशा में मंडल द्वारा अनेक सार्थक कदम उठाए गये हैं। औद्योगिक इकाईयों एवं औद्योगिक क्षेत्रों का नियमित निरीक्षण कर चिमनी एवं धूल के अन्य स्त्रोतों से उत्सर्जन में प्रभावी नियंत्रण कराया जा रहा है। स्पंज आयरन संयंत्रों एवं ताप विद्युत संयंत्रों की चिमनियों से उत्सर्जन के सतत परिमापन के लिए ओपेसिटी मीटर स्थापित किये गये हैं। ठोस अपशिष्ट चार-डोलोचार का पॉवर प्लांटों एवं ईट भट्ठों में ईंधन के रूप में उपयोग हेतु विक्रय किया जा रहा है तथा ई.एस.पी. डस्ट, ईंट निर्माताओं को एवं भूमि भराव हेतु प्रदाय की जा रही है। फ्लाई ऐश, सीमेंट तथा ईंट निर्माताओं को प्रदाय की जा रही है। स्लैग से मेट्ल रिकवरी हेतु संयंत्र स्थापित किये गये हैं, जिससे मेट्ल रिकवर किया जाकर पुनर्उपयोग किया जा रहा है तथा मिल स्केल का भी पुनर्उपयोग किया जा रहा है। प्रायः सभी वृहद एवं मध्यम श्रेणी की औद्योगिक ईकाईयों के द्वारा आंतरिक मार्गों का पक्कीकरण किया गया है तथा वृक्षारोपण किया जा रहा है। स्पंज आयरन, पॉवर प्लांट, फेरो एलायज प्लांट आदि संयंत्रों की चिमनियों से डस्ट के उत्सर्जन के मानक को और अधिक सख्त किया गया है। मंडल जीव चिकित्सा अपशिष्ठ, नगरीय ठोस अपशिष्ठ, परिसंकटमय अपशिष्ठ एवं प्लास्टिक अपशिष्ठ प्रबंधन हेतु पर्यावरणीय नियमों में दिए गये प्रावधानों के पालन के लिए कटिबद्ध है। राज्य में पर्यावरणीय अधिनियमों एवं नियमों के पालन हेतु कड़े कदम उठाने होंगे एवं मंडल ने इसके लिए भी कमर कस ली है।

मेरी यह सोच है कि बिना जन भागीदारी व जन जागरूकता के पर्यावरण संरक्षण का कार्य किया जाना संभव नहीं है। इसलिए मंडल द्वारा जनजागरूकता हेतु अनेक ऐसे कार्यक्रम भी आयोजित किये जाने की योजना है, जिसमें ज्यादा से ज्यादा जन भागीदारी विशेषकर स्कूली व महाविद्यालयीन छात्र-छात्रायें शामिल हों। भविष्य में राज्य स्तरीय ईको बाल मेला, पर्यावरणीय स्थलों का भ्रमण, जैव विविधता पर कार्यशालाएं, नगरीय ठोस अपशिष्ठ एवं जीव चिकित्सा अपशिष्ठ प्रबंधन पर कार्यशालाओं का आयोजन इसी दिशा में मंडल द्वारा किये जा रहे प्रयास होंगे। मुझे न्यूज लेटर के इस अंक पर आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

देवेन्द्र सिंह
सदस्य सचिव
छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल

अध्यक्ष की कलम से

छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल समय समय पर न्यूज लेटर का प्रकाशन कर अपनी गतिविधियों की जानकारी देता रहता है। न्यूज लेटर का यह अंक विश्व पर्यावरण दिवस विशेषांक है। इस वर्ष यू.एन.ई.पी. द्वारा पर्यावरण दिवस की जो थीम निर्धारित की गई वह मुख्यतः ग्लोबल वार्मिंग एवं क्लाईमेट चेंज पर आधारित है। ग्लोबल वार्मिंग 21वीं सदी में दुनिया के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है। ग्लोबल वार्मिंग और इसके कारण उत्पन्न जलवायु परिवर्तन की परिस्थितियां हमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति गंभीरता से सोचने के लिए विवश करती है। न सिर्फ छोटे समुद्री द्वीपों बल्कि पूरे विश्व को ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभावों से बचाने के लिए हमें सम्मिलित प्रयास करने चाहिए। जिसके लिए हर नागरिक को जागरूक होना जरूरी है।

यहां इस अवसर पर मैं मंडल की विभिन्न गतिविधियों के संबंध में संक्षेप में चर्चा करना चाहूंगा। मंडल राज्य में प्रदूषण नियंत्रण के लिए लगातार प्रयास कर रहा है। औद्योगिक इकाईयों से हो रहे उत्सर्जन को नियंत्रित करने के लिए मंडल द्वारा इन इकाईयों में प्रभावकारी प्रदूषण नियंत्रण उपकरणों की स्थापना तथा उनके सतत संचालन को सुनिश्चित किया जा रहा है। राज्य में कुछ शहरों में कंटिन्यूअस एम्बीएन्ट एयर मॉनिटरिंग स्टेशन स्थापित किए गए हैं,जिन्हें सभी प्रमुख शहरों में स्थापित किये जाने की योजना है। जहां भी ये स्टेशन लगे हैं, वहां डिस्प्ले की उचित व्यवस्था की जा रही है, जिससे कि लोग दूर से ही वायु प्रदूषण के आंकड़े देख व समझ सकें। मैंने राज्य की जीवनदायनी नदियों व अन्य प्राकृतिक जल स्त्रोतों की जल गुणवत्ता की सतत निगरानी रखने के निर्देश दिए हैं। यह सुनिश्चित किया गया है कि किसी भी औद्योगिक इकाई से कोई प्राकृतिक जल स्त्रोत प्रभावित न हो। प्रदेश में तेजी से हो रहे औद्योगीकरण एवं शहरीकरण के कारण मंडल के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में स्थापित प्रयोगशालाओं का उन्नयनीकरण एवं सुदृढ़ीकरण का कार्य आई.आई.टी. मुम्बई के सहयोग से प्रारंभ किया गया है। राज्य में 40 माईक्रॉन से कम मोटाई के प्लास्टिक कैरी बैग्स को प्रतिबंधित कर दिया गया है। जीव चिकित्सा अपशिष्ठ प्रबंधन में भी मंडल द्वारा कठोर कार्यवाही की जा रही है। अभी हाल में ही 23 अस्पतालों को कारण बताओ नोटिस जारी किये गये हैं। मंडल में प्रदेश के उद्योगों को सम्मति/सम्मति नवीनीकरण प्रदान करने के लिए एक वेब आधारित एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर ऑनलाईन कनसेंट मैनेजमेंट एवं मॉनिटरिंग सिस्टम लागू किया गया है, जिससे कि ये सभी कार्य स्वसंचालित हो सके।

मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी के सहयोग से हम राज्य में पर्यावरण की स्थिति को और बेहतर बनाएंगे तथा विभिन्न पर्यावरण नियमों का पालन सुनिश्चित करेंगे।

एन. बैजेन्द्र कुमार
अध्यक्ष
छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल

डॉ. रमन सिंह
मुख्यमंत्री
छत्तीसगढ़ शासन

संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल द्वारा न्यूज लेटर का विशेष अंक प्रकाशित किया जा रहा है। वातावरण के बढ़ते तापमान और प्रकृति पर पड़ रहे इसके दुष्प्रभावों से पूरा विश्व जूझ रहा है। इन परिस्थितियों में एक नागरिक के रूप में हमारा कर्त्तव्य और बढ़ जाता है। हमारा राज्य संसाधनों की दृष्टि से असीमित संभावनाएं समेटे हुए है। राज्य को प्रगति की दौड़ में आगे रखते हुए छत्तीसगढ़ शासन सतत रूप से प्रयत्नशील है। इसी दिशा में शासन द्वारा यहां उपलब्ध साधनों को अवसरों में बदलने के लिए तथा औद्योगिक गतिविधियों को सुअवसर प्रदान करने के लिए ग्लोबल मीट का आयोजन किया गया था। हमारा प्रयास है कि राज्य आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हो एवं प्रदेश की जनता का भी सर्वांगीण विकास हो। लेकिन साथ ही हमारा जोर इस बात पर भी है कि प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर छत्तीसगढ़ राज्य पर्यावरण संरक्षण के दिशा में भी अग्रणी रहे। राज्य में प्रदूषण नियंत्रण और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रयत्नशील छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल को मैं उनकी गतिविधियों के लिए बधाई देता हूं साथ ही पर्यावरणीय नियमों के समुचित क्रियान्वयन में भी सफल हों, ऐसी शुभकामनाएं देता हूं। प्रदेश में पर्यावरण संरक्षण का काम हमें मिलकर करना है, विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर यही मेरी कामना है।

डॉ. रमन सिंह

राजेश मूणत
मंत्री
आवास एवं पर्यावरण विभाग

संदेश

छत्तीसगढ़ शासन द्वारा राज्य में विगत 10 वर्षों में औद्योगीकरण को नई दिशा और गति दी गई है। जिसके कारण राज्य में नई औद्योगिक इकाईयां स्थापित हुई हैं। शासन औद्योगीकरण के साथ पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी संवेदनशील है और इस दिशा में छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल द्वारा सतत रूप से प्रयास किया जा रहा है। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल द्वारा न्यूज लेटर के इस अंक के प्रकाशन पर मैं बधाई देता हूं। साथ ही ये आशा भी करता हूं कि मंडल अपने सतत प्रयासों से राज्य में पर्यावरण की स्थिति को और बेहतर बनाएगा। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सभी पाठकों को को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

राजेश मूणत

राज्य स्तरीय इको बाल मेले एवं सर्वश्रेष्ठ इको क्लब चयन प्रतियोगिता का आयोजन

राज्य स्तरीय इको बाल मेले के अवसर पर विचार व्यक्त करते हुए पर्यावरण मंत्री श्री राजेश मूणत

प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए पर्यावरण मंत्री श्री राजेश मूणत

सर्वश्रेष्ठ इको क्लब को पुरस्कृत करते हुए मान. आवास एवं पर्यावरण मंत्री श्री राजेश मूणत

प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए मंडल के अध्यक्ष श्री एन.बैजेन्द्र कुमार

सर्वश्रेष्ठ इको क्लब चयन प्रतियोगिता प्रस्तुतीकरण करते हुए स्कूली बच्चे

ईको बाल मेले में पोस्टर प्रतियोगिता का एक दृश्य

नेशनल ग्रीन कोर कार्यक्रम के अंतर्गत स्कूली बच्चों में जागरुकता लाने के उद्देश्य से 21 व 22 नवम्बर को इको क्लब के स्कूली बच्चों के लिए राज्य स्तरीय इको बाल मेले एवं सर्वश्रेष्ठ इको क्लब चयन प्रतियोगिता का आयोजन मंडल द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रदेश के 71 चयनित इको क्लब के लगभग 200 स्कूली बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाले इको क्लब स्कूलों को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कृत किया गया। इस आयोजन में स्कूली बच्चों को पर्यावरण से संबंधित शिक्षा भी दी गई एवं इनके मध्य विभिन्न प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

पर्यावरणीय समाचार

कार्बन डाईआक्साइड से बनेगी बिजली

ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार कार्बन डाईऑक्साईड से बिजली उत्पादन की नई विधि इजाद करने का वैज्ञानिकों ने दावा किया है। उनका दावा है कि बिजली उत्पादन संयंत्रों और दूसरे स्त्रोंतों से निकलने वाली कार्बन डाईऑक्साईड गैस से बिजली पैदा की जा सकती है।
बर्ट हमेलर्स और उनकी टीम ने यह विधि विकसित की है। बर्ट ने बताया कि पूरी दुनिया में कोयला, तेल और गैस से संचालित बिजली उत्पादन संयंत्रों से प्रतिवर्ष करीब 12 अरब टन और घरेलू उद्योगों से 11 अरब टन कार्बन डाईऑक्साईड गैस उत्सर्जित होती है। नई विधि में इसे कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया गया। उन्होंने बताया कि कार्बन डाईऑक्साईड गैस की पानी या किसी दूसरे तरल पदार्थ से प्रतिक्रिया कराए जाने के बाद उसमें इलेक्ट्रान का प्रवाह कराया जाता है, जिससे बिजली पैदा होती है।

ग्लोबल वार्मिंग से नहीं, हिमयुग से डर

अभी तक धरती के गरम होने और उससे पिघलने वाली बर्फ के कारण समुद्र के जलस्तर के बढ़ने खतरों से आगाह किया जाता रहा है, लेकिन अब वैज्ञानिक कह रहे हैं कि पिछले 15 साल से धरती के तापमान में वृद्धि नहीं हुई है। यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा। यहाँ तक कि हिम युग के आने का खतरा भी मंडरा रहा है।
दुनिया भर में 30 हजार जगहों से एकत्रा किए गए आंकड़े कहते हैं कि 1997 के बाद से धरती के तापमान में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई है, क्योंकि 20वीं सदी में लगातार उच्च स्तर पर ऊर्जा छोड़ने के बाद अब सूर्य न्यूनतम स्तर की ओर बढ़ रहा है। इसे हिम युग के वापस लौटने का संकेत माना जा रहा है। ऐसे में गर्मियों में सर्दी पड़ेगी, सर्दियां जमा देने वाली होंगी और अनाज उगाने लायक मौसम छोटा हो जायेगा।

भारतीय वैज्ञानिकों ने प्लास्टिक के कचरे से बनाया कार का ईंधन

भारतीय शोधकर्ताओं ने प्लास्टिक के कचरे से कार का ईंधन तैयार करने में सफलता हासिल की है। शोधकर्ताओं ने प्लास्टिक को अपेक्षाकृत कम तापमान पर पिघलाकर तरल ईंधन में तब्दील किया और फिर इसे कार के इंजन में प्रयोग करने लायक बनाया। शोधकर्ताओं का कहना है कि रासायनिक रूप से यह ईंधन काफी हद तक दूसरे ईंधनों जैसा ही है। प्लास्टिक के एक किलो कचरे से 700 ग्राम ईंधन तैयार होता है। बाल्टी, डिब्बे, कम्प्यूटर, पॉलीथीन बैग के निर्माण के लिए लो-डेंसिटी पॉलीएथलीन (एलडीपीई) का प्रयोग किया जाता है। सेंचुरियन यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी.......एंड मैनेजमेंट ओडिशा के केमिस्ट अच्युत कुमार पांडा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी ओडिशा के केमिकल इंजीनियर रघुवंश कुमार सिंह के साथ एलडीपीई को तरल ईंधन में परिवर्तित करने के लिए सस्ती तकनीक ढूंढने की कोशिश में जुटे हुए है। चूंकि अधिकतर प्लास्टिक पैट्रोकेमिकल्स से बने होते हैं, इसलिए यह मिश्रण इन्हें दोबारा ईंधन की जगह इस्तेमाल करने लायक बना देता है।

इकोसिस्टम मिशन डॉक्यूमेंट को मिली मंजूरी

केन्द्रीय मंत्रीमंडल ने 28 फरवरी 2014 को नेशनल मिशन फॉर सस्टेनिंग हिमालन इकोसिस्टम (एनएमएसएचई) के मिशन डॉक्यूमेंट को मंजूरी दे दी। इस मिशन की शुरूआत नेशनल प्लान ऑन क्लाइमेट चेंज (एनएपीसीसी)के तहत् की गई थी। इस मिशन के कार्यान्वयन के लिए 12वीं पंचवर्षीय योजना में 550 करोड़ रूपये का बजट होगा। मिशन का प्राथमिक उद्देश्य हिमालय की पारिस्थतीतंत्रा की स्थिति का लगातार पता लगाने के लिए एक स्थायी राष्ट्रीय क्षमता को विकसीत करना और नीति निर्माण कार्यों में नीति निर्माण निकायों को सक्षम बनाना है। इस मिशन के तहत भारत और हिमालय क्षेत्रा के इलाकों को सतत विकास के लिए सहायता भी प्रदान की जाएगी।

स्वास्थ्य के लिए चमत्कारी स्टेम सेल

कैंसर रागियों को पुनः पैरों पर खड़ा करने की तरकीब ढूंढ निकाली है। पश्चिमी साइबेरिया के एक छोटे नगर युगरा के डॉक्टर स्टेम सेल की मदद से रक्त कैंसर का सफलतापूर्वक इलाज कर रहे हैं। इन जादुई स्टेम सेलों से किसी भी प्रकार के यानी लीवर, हड्डी या रक्त आदि के सेल बनाए जा सकते हैं। दिमित्री कुदाश्किन पहले ऐसे रोगी थे, जिनकी कोशिकाओं का प्रत्यार्पण कर युगरा में पहली तीन साल पहले ऐसा इलाज किया गया था। 32 वर्ष की उम्र में दिमित्री मल्टीप्ल मिएलोमा रोग के शिकार पाए गए थे। मल्टीप्ल मिएलोमा रक्त की सबसे घातक बीमारियों में से एक है। उनके बचने की लगभग कोई उम्मीद नहीं रह गयी थी।

उनके सेल प्रत्यार्पण ऑपरेशन के बाद अब तक तीन साल बीत चुके हैं। इस दौरान युगरा के डाक्टर 34 और सफल सेल प्रत्यार्पण ऑपरेशन कर चुके है। वर्तमान में सभी रोगी खुद को स्वस्थ बता रहे है।

शेष पृष्ठ 8-9 पर

पर्यावरण संरक्षण हेतु छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल के प्रयास

- मंडल द्वारा प्रदेश में स्थापित वायु प्रदूषणकारी उद्योगों में वायु प्रदूषण नियंत्रण हेतु व्यवस्था यथा ईएसपी/बैग फिल्टर/स्क्रबर/डस्ट कलेक्टर की स्थापना की गई है। प्रदूषण के प्रभावी नियंत्रण हेतु चिमनी से उत्सर्जन की अधिकतम सीमा को कम कर 50 मिलीग्राम प्रति सामान्य घनमीटर तक सीमित कर, स्थापित वायु प्रदूषण नियंत्रण व्यवस्थाओं के उन्नयन की कार्यवाही करवाई जा रही है। इसी प्रकार जल प्रदूषणकारी उद्योगों में दूषित जल उपचार हेतु व्यवस्था की गई है। स्थापित वायु एवं जल प्रदूषण नियंत्रण व्यवस्थाओं का सतत् संचालन सुनिश्चित करने हेतु नियमित निगरानी रखी जा रही है।
- मंडल द्वारा राज्य में औद्योगिक प्रदूषण कम करने की दृश्टि से स्पंज आयरन इकाईयों में उत्पन्न गर्म फ्लू गैस को इस्तेमाल करते हुए डब्लू.एच.आर.बी. के माध्यम से विद्युत उत्पादन करने की पहल की गई है।
- मंडल द्वारा खनन क्षेत्रों में उत्खनन कार्य से संभावित प्रदूषण की रोकथाम हेतु खदान की आंतरिक सड़कों पर जल छिड़काव की व्यवस्था, खनन के दौरान वेट ड्रीलिंग/कंट्रोल ब्लास्टिंग की व्यवस्था एवं खनिज को ढ़ंककर परिवहन करने की कार्यवाही सुनिश्चित कराई गई है।
- मंडल द्वारा राज्य के प्रमुख शहरों में राष्ट्रीय परिवेशीय वायु गुणवत्ता मापन कार्यक्रम संपादित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश के सभी प्रमुख औद्योगिक शहरों जैसे भिलाई, रायपुर, कोरबा में सतत् वायु गुणवत्ता मापन का कार्य केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सहयोग व दिशा निर्देष में सम्पादित किया जा रहा है। समय-समय पर राज्य की प्रमुख नदियों जैसे शिवनाथ, खारून, महानदी, अरपा, शंकनी -डंकनी एवं हसदेव नदियों की जल गुणवत्ता का मापन भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक जल स्त्रोतों जैसे तालाबों एवं औद्योगिक दूषित जल की गुणवत्ता का भी मापन किया जाता है।
- मंडल द्वारा प्रमुख शहरों में कन्टीन्यूअस एम्बीएन्ट एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन स्थापित किये जा रहे हैं। कुल 27 स्थानों पर इन स्टेशनों की स्थापना कर ली गई है।
- मंडल द्वारा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कदम आगे बढ़ाते हुए सभी औद्योगिक इकाईयों एवं खदानों में लगभग 20 लाख वृक्षों का रोपण कराया गया है।
- मंडल द्वारा स्कूली बच्चों में पर्यावरणीय जागरूकता हेतु नेशनल ग्रीन कोर कार्यक्रम के अन्तर्गत पूरे प्रदेश के 6750 स्कूलों में इको क्लब गठित एवं योजना के अन्तर्गत 6,00,000 स्कूली बच्चें लाभांवित हो रहे हैं। मंडल द्वारा शीघ्र ही कुछ और ईको क्लब गठन की प्रक्रिया जारी है।
- मंडल द्वारा समय-समय पर जन जागरूकता संबंधी कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। विभिन्न पर्यावरणीय दिवसों में भी स्कूली व महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं एवं स्वयं सेवी संस्थाओं को साथ लेकर जागरूकता अभियान चलाये जा रहे हैं। होर्डिंग्स इत्यादि के माध्यम से भी बड़े पैमाने पर जागरूकता के प्रयास किये जा रहे हैं।
- वर्तमान में मंडल के 07 क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित है। वर्तमान में इनमें से 04 क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः रायपुर, दुर्ग-भिलाई, बिलासपुर एवं कोरबा में प्रयोगशाला स्थापित है। इन प्रयोगशालाओं में उपलब्ध मॉनिटरिंग सुविधा सीमित है, जिसका विस्तार किया जाना अत्यंत आवश्यक है। शेष 03 क्षेत्रीय कार्यालयों क्रमशः रायगढ़, जगदलपुर एवं अंबिकापुर द्वारा समीपस्थ क्षेत्रीय कार्यालयों से समन्वय कर मॉनिटरिंग कार्य संपादित किया जाता है। इन सभी प्रयोगशालाओं में जल/वायु मॉनिटरिंग हेतु आधुनिक उपकरणों की आवश्यकता है,

जिससे मॉनिटरिंग हेतु सभी आवश्यक प्रचालकों (पैरामीटर्स) का मापन किया जा सके। साथ ही प्रयोगशाला में पदस्थ वैज्ञानिक शाखा के अधिकारी/कर्मचारियों को जल/वायु मॉनिटरिंग के लिए उन्नत तरीके से प्रशिक्षित किया जाना भी आवश्यक है।

मंडल द्वारा उक्त कार्य के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.) मुंबई से अनुबंध किया जा रहा है। इस कार्य के लिए उक्त संस्था द्वारा दिनांक 12/05/2014 को सहमति पत्र दिया गया है। माह जून 2014 में अनुबंध को अंतिम रूप दिया जा सकेगा। मंडल की सभी प्रयोगशालाओं का 02 वर्ष के भीतर उन्नयन करने का लक्ष्य है।

- भारत शासन, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा दिनांक 13/01/2010 को कोरबा को क्रिटिकली पाल्युटेड एरिया घोषित किया गया था। भारत शासन के निर्देशानुसार कोरबा स्थित सभी वृहद् उद्योगों से समन्वय कर कोरबा एक्शन प्लान तैयार किया गया। यह एक्शन प्लान दिनांक 04/02/2011 को केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को प्रस्तुत किया गया था। इस एक्शन प्लान के आधार पर भारत शासन, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा दिनांक 17/09/2013 को कोरबा में लगाये गये प्रतिबंध को हटा दिया गया है तथा मंडल को थर्ड पार्टी मॉनिटरिंग कराने हेतु निर्देशित किया गया है। मंडल द्वारा उक्त कार्य हेतु दिनांक 17/04/2014 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर से अनुबंध किया गया है। उक्त संस्था द्वारा दिनांक 23/05/2014 से कोरबा में मॉनिटरिंग कार्य प्रारंभ किया जा रहा है। उक्त संस्था द्वारा मॉनिटरिंग कर रिपोर्ट 09 माह की अवधि अर्थात् फरवरी 2015 तक प्रस्तुत की जावेगी।
- मंडल द्वारा राज्य के बड़े शहरों जैसे रायपुर, दुर्ग-भिलाई, बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़ आदि में महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल का चयन कर कंटीन्यूअस एम्बियंट एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन की स्थापना करने का लक्ष्य है। वर्तमान में विभिन्न उद्योगों द्वारा 28 कंटीन्यूअस एम्बियंट एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशन स्थापित किये गये है। इस व्यवस्था द्वारा आम जनता को शहर में परिवेशीय वायु गुणवत्ता (वातावरण में विद्यमान पार्टिकुलेट मैटर, सल्फर डाईआक्साईड, नाइट्रोजन ऑक्साईड) की जानकारी दी जा सकती है। राज्य के बहुत से वृहद् उद्योगों द्वारा अपने परिसर में इस तरह के उपकरण स्थापित किये गये है। मंडल द्वारा यह प्रयास किया जा रहा है कि नेटवर्किंग द्वारा विभिन्न स्टेशनों के परिणाम (डाटा) को मंडल मुख्यालय से संबद्ध किया जायें। इससे मंडल मुख्यालय स्तर से ही विभिन्न क्षेत्रों में वायु प्रदूषण स्तर का आंकलन हो सकेगा। आगामी 01 वर्ष में यह कार्य करने का लक्ष्य है।
- खतरनाक अपशिष्टों/अन्य अपशिष्टों का सीमेंट प्लांट की क्लिन में को-प्रोसेसिंग एक अच्छा व फायदेमंद विकल्प है। इससे कोयले की बचत होती है, जो राज्य के खनिज संसाधन के संरक्षण में सहायक है। मंडल के इस दिशा में किये जा रहे प्रयासों के फलस्वरूप छत्तीसगढ़ राज्य के 03 प्रमुख सीमेंट उद्योगों द्वारा इस कार्य हेतु केन्द्रीय प्रदूषण नियत्रण बोर्ड से अनुमति प्राप्त कर ली गई है एवं 02 अन्य द्वारा इस दिशा में प्रयास किया जा रहा है। आगामी 02 वर्षो में अन्य क्षेत्र के उद्योगों जैसे पॉवर प्लांट, स्टील प्लांट में भी इस दिशा में कार्य करने का लक्ष्य है।

ग्लोबल वार्मिंग से अर्थ है-वायुमंडल की धरातल के पास की परतों के तापमान में वृद्धि होना। इस प्रक्रिया का प्रारंभ मध्य 20वीं शताब्दी से हुआ माना जाता है और अनेक जलवायु वैज्ञानिकों के मतानुसार इस प्रक्रिया के जारी रहने की संभावनाएं है। आईपीसी की 2007 की रिपोर्ट के अनुसार 20वीं शताब्दी में धरातलीय तापमान में 0.74 + 0.180 से. की वृद्धि हुई है। इस बढ़े हुए तापमान का सबसे महत्वपूर्ण कारण वायुमंडल में ग्रीन हाऊस गैसों के अनुपात में हुई वृद्धि है और इस वृद्धि का प्रमुख कारण जीवाश्म ईंधनों का उपयोग तथा वनों के ह्रास जैसी मानवीय क्रियाएं हैं। कार्बन-डाई-ऑक्साइड, जलवाष्प, मीथेन तथा ओजोन सबसे महत्वपूर्ण ग्रीन हाऊस गैसें हैं। यह भी माना जा रहा है कि मध्य 20वीं शताब्दी से वायुमंडल में इन गैसों के बढ़ते हुए अनुपात के परिणामस्वरूप तापमान में जो वास्तविक वृद्धि हुई उससे भी अधिक वृद्धि होनी चाहिए थी। तापमान की इस अपेक्षाकृत कम वृद्धि का कारण ग्लोबल डिमिंग (दीप्ति मंदन) को माना जाता है। जिसका अर्थ है कि वायुमंडल में धूल एवं अन्य कणों की बढ़ी हुई मात्रा के कारण धरातल तक पहुंचने वाले सूर्य के प्रकाश में कमी हो रही है। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विभिन्न मानवीय क्रियाओं, जैसे-औद्योगीकरण, निर्माण कार्य तथा जीवाश्म ईंधनों के बढ़ते हुए उपयोग के कारण वायुमंडल में उपस्थित धूल कणों तथा अन्य प्रदूषकों का अनुपात बढ़ता रहा है। जिसको ग्लोबल वार्मिंग डिमिंग के लिए उत्तरदायी माना जाता है। इस कारक को वर्ष 1940 के पश्चात् देखी गई तापमान घटने की प्रवृत्ति का करण माना जाता है।

वायुमंडल का बढ़ता हुआ तापमान हिमनदियों के पिघलने, हिमचादरों के संकुचन, समुद्रतल के परिवर्तन तथा वर्षण की मात्रा में परिवर्तन आदि अनेक परिणामों का कारण हो सकता है। वर्षण के प्रारूप में परिवर्तन अनके घटनाओं को जन्म दे सकते हैं, जैसे-उष्ण कटिबंधीय मरूस्थलों का विस्तार तथा विभिन्न क्षेत्रों में बाढ़ तथा सूखे का प्रकोप। अभी तक के अध्ययनों के आधार पर यह माना जा रहा है कि ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव समस्त संसार में एक समान नहीं होगा और इस प्रभाव के ध्रुवीय क्षेत्रों में सर्वाधिक होने की आशंका जताई जाती है। तापमान में वृद्धि के साथ-साथ अति गर्म मौसम, सूखा तथा अति वर्षा जैसे-आपदाओं की बारंबारता में वृद्धि होने की भी आशंका है। यद्यपि भविष्य में होने वाली तापमान वृद्धि के संदर्भ में जो अनुमान लगाए जा रहे हैं उनमें परस्पर काफी अंतर पाए जाते हैं परंतु यह लगभग सर्वमान्य है। कि वायुमंडल के तापमान में वृद्धि निश्चित रूप से हो रही है और इस वृद्धि में से अधिकांशतः मानवीय क्रियाओं का परिणाम है। तापमान में वृद्धि का सबसे महत्वपूर्ण साक्ष्य म ध्य 20वीं शताब्दी से वायुमंडल तथा समुद्र के तापमान में वृद्धि पर्वतीय क्षेत्रों में हिम तथा हिम चादरों की बर्फ का पिघलना और इसके परिणामस्वरूप समुद्रतल में वृद्धि हैं। जैसा कि पहले कहा जा चुका है वर्ष 1906 से लेकर 2005 तक औसत तापमान में 0.74 + 0.180 सें. की वृद्धि हुई है और तापमान में इस वृद्धि की दर इस अवधि के उत्तरार्ध में इस समूची अवधि के औसत से दोगुनी रही है। नगरीय ऊष्मा द्वीप प्रभाव (Urban Heat Island Effect) को इस वृद्धि के लिए अशंतः

कैसा होगा दम तोड़ती पृथ्वी पर जीवन

पृष्ठ 5 का शेष

वैज्ञानिकों ने यह बताया है कि जब सूर्य पृथ्वी को भूनने लगेगा तो यहाँ जीवन कैसा होगा तथा इतर-ग्रहों के खगोलविद उसे किस रूप में देखेंगे। पांच अरब साल बाद सूर्य अत्यंत फूल जाएगा और उसका व्यासार्ध आज से 256 गुना अधिक हो जाएगा। पृथ्वी की कक्षा संभवतः उसी में समा जाएगी। किंतु इससे काफी पहले आज से 1-2 अरब साल बाद ही पृथ्वी की सतह गरम होने लगेगी, महासागर खौलने लगेंगे। जीवन केवल जीवाणुओं के रूप में बचा रहेगा। वे भी और एक अरब साल बाद पूरी तरह नष्ट हो जाएंगे जब हमारे ग्रह का तापमान 300 डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुंच जाएगा।

उत्तरदायी माना जा रहा है। वर्ष 1979 से क्षोभमंडल के निचले भाग के तापमान में प्रति दशक 0.130 सें. से 0.220 सें. की वृद्धि हो रही है। नासा तथा राष्ट्रीय जलवायविक आंकड़ा केन्द्र (नेशनल क्लाइमेटिक डाटा सेंटर) के आंकड़ों के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि वर्ष 2005 तथा 2010, 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से जबसे विश्वसनीय जलवायु संबधी आंकड़े मिलने आरंभ हुए है, सबसे गर्म वर्ष रहे हैं। इससे पहले वर्ष 1998 को सबसे गर्म वर्ष माना गया था और इन वर्षों में तापमान 1998 के तापमान से कुछ अधिक रहा है। कुछ अन्य अध्ययनों के अनुसार 1998 को अभी भी सबसे गर्म वर्ष माना जाता है और 2005 को दूसरे स्थान पर तथा 2003 तथा 2010 की तीसरे स्थान पर माना जा रहा है। परंतु World Meteoro - logical Organisation के अनुसार 1998, 2005 तथा 2010 के तापमान में अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण के महत्वपूर्ण नहीं है।

तापमान में यह वृद्धि संसार के सभी भागों में एक समान नहीं रही है। वर्ष 1979 से महाद्वीपों के तापमान में (0. 250 सें. प्रति दशक) महासागरों के तापमान (0. 130 सें प्रति दशक) की अपेक्षा लगभग दोगुनी वृद्धि हुई है। महासागरों तथा महाद्वीपों के तापमान के वितरण में अंतर के परिणामस्वरूप उत्तरी गोलार्द्ध के तापमान में वृद्धि दक्षिणी गोलार्द्ध की अपेक्षा अधिक तीव्र रही है। यद्यपि वायुमंडल में ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा में वृद्धि उत्तरी गोलार्द्ध में अधिक हो रही है परंतु इसको दोनों गोलार्द्ध के मध्य तापमान में वृद्धि में अंतर के लिए उत्तरदायी नहीं माना जाता क्योंकि प्रमुख ग्रीन हाऊस गैसें वायुमंडल में दीर्घकाल तक बनीं रहती हैं और दोनों गोलार्द्धों में इनके सम्मिश्रण के कारण वायुमंडल में इनमें अनुपात में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया जाता।

यद्यपि जलवायु में परिवर्तन अनके कारणों से आ सकते हैं परंतु पृथ्वी के परिक्रमा जैसे-कारकों के परिणामस्वरूप आने वाले परिवर्तन इतनी धीमी उत्तरदायी नहीं माना जा सकता। यही कारण है कि पिछली शताब्दी में हुई तापमान में वृद्धि को मूख्यतः ग्रीन हाउस प्रभाव का परिणाम माना जा रहा है। कुछ अध्ययनों के अनुसार वायुमंडल में प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली ग्रीन हाउस गैसें तापमान को लगभग 330 सें. तक बढत्रा सकती है। जल वाष्प को कुल ग्रीन हाउस प्रवाह के 36 से 70 प्रतिशत के लिए उत्तरदायी मान जाता है। इसी प्रकार कार्बन डाई-ऑक्साइड को ग्रीन हाउस प्रभाव के 9 से 26 प्रतिशत, मीथेन को 4-9 प्रतिशत तथा ओजोन को 3-7 प्रतिशत ग्रीन हाउस प्रभाव के लिए उत्तरदायी माना जाता है।

कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा में कुल वृद्धि में से 75 प्रतिशत वृद्धि जीवाश्म ईंधनों के उपयोग का परिणाम है जबकि शेष को भूमि उपयोग में हुए परिवर्तनों, मुख्यतः वनों के ह्रास का परिणाम माना जा रहा है। बढ़ती हुई जनसंख्या और जीवाश्म ईंधनों की बढ़ती हुई प्रति व्यक्ति खपत वायुमंडल में बढ़ती हई कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा के लिए उत्तरदायी सबसे महत्वपूर्ण कारक है। भवष्यि के संदर्भ में लगाए गए लगभग सभ आकलनों के अनुसार आने वाले दशकों में वायुमंडल में कार्बन-डाई ऑक्साइड की मात्रा के बढ़ते रहने की आशंका है।

ऊर्जा संरक्षण के लिए एलईडी बल्ब

ऊर्जा संरक्षण के तहत् सीएफएल का उपयोग भविष्य के लिए बेहतर नहीं है। कई राज्यों ने आम जन के साधारण बल्ब के बदले सीएफएल उपलब्ध कराए जा रहे है। एलईडी (लाईट इमिटिंग डायोड्स प्रकाश उत्सर्जन यंत्र) तकनीक को अपनाना समझदारी होगी। सीएफएल बल्ब रेडियेशन छोड़ते हैं । नष्ट होने पर घातक पारा अपशिष्ठ में मिल जाता है। एलईडी बल्ब सीएफएल बल्बों से कम ऊर्जा पर अधिक रोशनी देते हैं। एलईडी महंगे जरूर है, मगर ज्यादा चलते है। 5 वॉट का एलईडी 15 वॉट के सीएफएल के बराबर रोशनी देता है। बिजली में प्रतिवर्ष 77 रूपए की बचत है। वहीं सीएफएल का जीवन 250 दिन है तो एलईडी का जीवन असीमित है।

विश्व पर्यावरण दिवस की थीम -वर्ष 2000 से 2014 तक

Year	Theme	Image
2000	The Environment Millennium – Time to Act	
2001	Connect with the World Wide Web of Life	
2002	Give Earth a Chance	
2003	Water – Two Billion People are Dying for It!	
2004	Wanted! Seas and Oceans – Dead or Alive?	
2005	Green Cities – Plan for the Planet!	
2006	Deserts and Desertification – Don't Desert Drylands!	
2007	Melting Ice – a Hot Topic?	
2008	Kick The Habit – Towards A Low Carbon Economy	
2009	Your Planet Needs You – UNite to Combat Climate Change	
2010	Many Species. One Planet. One Future	
2011	Forests: Nature at your Service	
2012	Green Economy: Does it include you?	
2013	Think.Eat.Save. Reduce Your Foodprint	
2014	World Environment Day - Raise Your Voice, Not the Sea Level	

अंतर्राष्ट्रीय ओजोन परत संरक्षण दिवस के अवसर पर ग्रीन क्विज का आयोजन

ग्रीन क्विज प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करते हुए प्रतिभागी

ग्रीन क्विज प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करते हुए प्रतिभागी

अंतर्राष्ट्रीय ओजोन परत संरक्षण दिवस के अवसर पर मंडल द्वारा महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं का ग्रीन क्विज आयोजित किया गया। इस क्विज प्रतियोगिता में कुल 18 महाविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया। आई. आई.एम. रायपुर की टीम ने प्रथम पुरस्कार, एन.आई.टी. रायपुर की टीम ने द्वितीय पुरस्कार एव बी.आई.टी. दुर्ग की टीम ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

05 जून 2013 विश्व पर्यावरण दिवस पर
परिसंवाद एवं पुरस्कार वितरण समारोह

05 जून विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए मंडल अध्यक्ष श्री एन. बैजेन्द्र कुमार

विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए मंडल अध्यक्ष श्री एन. बैजेन्द्र कुमार एवं श्री सुनील कुमार, प्रधान सम्पादक, छत्तीसगढ़ प्रेस

05 जून विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल द्वारा भोज्य पदार्थो की बर्बादी से पहले सोचिये विषय पर संगोष्ठी एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण समारोह स्थानीय नवीन विश्राम गृह, सिविल लाईन्स, रायपुर में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष श्री एन. बैजेन्द्र कुमार, छत्तीसगढ़ प्रेस के प्रधान सम्पादक, श्री सुनील कुमार सहित बड़ी संख्या में स्कूली बच्चे उद्योग प्रतिनिधि एवं मंडल के अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम में राज्य स्तरीय स्लोगन एवं पोस्टर प्रतियोगिताओं एवं ऑन दी स्पॉट पेंटिंग प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरित किये गये। इस अवसर पर कार्टून वॉच द्वारा कार्टूनों पर आधारित राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरित किये गये एवं विजेताओं के कार्टूनों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

16 सितम्बर 2013 अंतर्राष्ट्रीय ओजोन परत संरक्षण दिवस के अवसर पर भाषण व पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय ओजोन परत संरक्षण दिवस के अवसर पर मंडल द्वारा महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं का ग्रीन क्विज आयोजित किया गया। इस क्विज प्रतियोगिता में कुल 18 महाविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया। आई.आई.एम. रायपुर की टीम ने प्रथम पुरस्कार, एन.आई.टी. रायपुर की टीम ने द्वितीय पुरस्कार एव बी.आई.टी. दुर्ग की टीम ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। यह प्रतियोगिता 03 चरणों में सम्पन्न हुई। प्रथम चरण में लिखित परीक्षा के माध्यम से 08 टीमों का चयन किया गया तत्पश्चात 04-04 टीमों के मध्य सेमीफाइनल प्रतियोगिता आयोजित की गई। इनमें से एक एक टीम का चयन फाइनल के लिए किया गया।

तालाबों के जलगुणवत्ता की नियमित मॉनिटरिंग करें -श्री मूणत

रायपुर के सभी प्रमुख तालाबों की जल गुणवत्ता की नियमित रूप से मॉनिटरिंग की जानी चाहिए। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाए कि उद्योगों का दूषित जल नदियों में प्रवाहित न किया जाये।

उक्त निर्देश आवास एवं पर्यावरण विभागके माननीय मंत्री श्री राजेश मूणत ने दिए। श्री मूणत विगत 24/12/2013 को छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल की समीक्षा बैठक में बोल रहे थे। मंत्री जी ने आगे निर्देशित किया कि भिलाई इस्पात संयंत्र से हो रहे प्रदूषण की प्रभावी व्यवस्था सुनिश्चित की जाये। वहां से होने वाले वायु प्रदूषण पर सतत् निगरानी रखी जाये। माननीय मंत्रीजी ने रायपुर सहित राज्य के अन्य हिस्सों में भी वायु प्रदूषणकारी उद्योगों की नियमित जांच के निर्देश दिये। इसी के साथ माननीय मंत्री जी ने सड़क निर्माण में फ्लाईएश का अधिकतम उपयोग किये जाने के निर्देश दिये। आपने ईको क्लब के माध्यम से जन जागरूकता लाये जाने संबंधी कार्यक्रमों की भी समीक्षा की। माननीय मंत्रीजी ने वर्तमान में संचालित ईको क्लब में छात्रों की संख्या में वृद्धि करते हुए स्कूलों की भागीदारी सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिये। बैठक में स्टेट अथॉरिटी द्वारा रेत खदानों से प्राप्त आवेदित प्रकरणों पर चर्चा करते हुए आपने निर्देशित किया कि छोटी खदानों के पर्यावरण स्वीकृति के सारे प्रकरण शीघ्रता से निपटाये जायें।

माननीय मंत्रीजी ने ऑनलाईन कनसेंट मैनेजमेंट सिस्टम, जल एवं वायु गुणवत्ता की मॉनिटरिंग, पर्यावरणीय स्वीकृतियां, फ्लाईएश की उपयोगिता, ऑनलाईन कन्टीन्यूअस एम्बीएंट एयर मॉनिटरिंग स्टेशन की स्थापना स्टेट ई.आई.ए. अथॉरिटी द्वारा छोटी खदानों को पर्यावरणीय स्वीकृति, ईको क्लब की गतिविधियां एवं जन जागरूकता संबंधित कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा की। बैठक में प्रमुख सचिव, आवास एवं पर्यावरण विभाग एवं अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल श्री एन. बैजेन्द्र कुमार, सहित मंडल के सभी आला अधिकारी उपस्थित थे।

बायो मेडिकल वेस्ट प्रबंधन नियम का पालन न करने वाले 23 चिकित्सा संस्थानों को पर्यावरण संरक्षण मंडल का नोटिस

बायो-मेडिकल वेस्ट प्रबंधन नियम का पालन न करने तथा बायो मेडिकल वेस्ट के सुरक्षित निपटान न करने वाले चिकित्सा संस्थानों का सतत निरीक्षण कर छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल इनके विरूद्ध कड़ी कार्यवाही करने जा रहा है। इस क्रम में अब तक प्रदेश के 23 बड़े चिकित्सा संस्थानों को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। इनमें एम्स, डॉ. भीमराव अम्बेडकर अस्पताल, रामकृष्ण केयर हास्पिटल, नारायणा एम. एम. आई, श्री बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईंस प्रा. लि., श्री बालाजी सुपर स्पेलिटी हास्पिटल, नारायण हॉस्पिटल, देवेन्द्र नगर, सृष्टि

मेडिकल कॉलेज एण्ड रिसर्च सेंटर कोरबा, इंदिरा गांधी जिला-चिकित्सालय कोरबा, मिशन हॉस्पिटल बिलासपुर, सिम्स बिलासपुर, जिला-चिकित्सालय, धमतरी, अग्रवाल नर्सिंग होम समता कॉलोनी, रायपुर आदि प्रमुख हैं। इन चिकित्सा संस्थानों को बायो मेडिकल वेस्ट प्रबंधन व्यवस्था में मंडल द्वारा जारी दिशा निर्देशों के अनुरूप आवश्यक सुधार करने हेतु 07 दिवस का समय दिया गया है। समय सीमा के उपरांत पुनः अस्पतालों का निरीक्षण कर संतोषजनक स्थिति न पाये जाने पर इनके विरूद्ध मंडल द्वारा पर्यावरण संरक्षण अधिनियम के प्रावधानों के अनुरूप कार्यवाही की जायेगी। मंडल संक्रामक बायो मेडिकल वेस्ट के समुचित निपटान हेतु गम्भीर है तथा इस हेतु समुचित कार्यवाही न करने वाले चिकित्सा संस्थानों को बख्शा नहीं जायेगा। मंडल द्वारा प्रदेश में संचालित अस्पतालों को नियम के दायरे में लाते हुए अब तक 515 चिकित्सालयों, नर्सिंग होम एवं पैथालॉजिकल लैब को प्राधिकार प्रदान किया गया है तथा इन सभी को नियम का पालन करने हेतु निर्देशित किया गया है।

छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल द्वारा की गयीं कार्यवाहियाँ

1. उल्लंघनकारी उद्योगों के विरूद्ध की गई कार्यवाही

1 जनवरी 2013 से 31 दिसम्बर 2013 की अवधि में जारी नोटिस एवं निर्देश

क्र.	क्षेत्रीय कार्यालय का नाम	नोटिसोंकी संख्या	निर्देशों की संख्या
1.	क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर	17	03
2.	क्षेत्रीय कार्यालय बिलासपुर	50	60
3.	क्षेत्रीय कार्यालय रायगढ़	14	1
4	क्षेत्रीय कार्यालय कोरबा	05	—
5.	क्षेत्रीय कार्यालय भिलाई–दुर्ग	05	02
6.	क्षेत्रीय कार्यालय अम्बिकापुर	—	—
7.	क्षेत्रीय कार्यालय जगदलपुर	12	6
	कुल	103	72

2. न्यायालयीन कार्यवाही

1 जनवरी 2013 से 31 दिसम्बर 2013 की अवधि में न्यायालयीन कार्यवाही

क.	क्षेत्रीय कार्यालय का नाम	उपरोक्त अवधि में दायर प्रकरणों की संख्या
01	क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर	03
02	क्षेत्रीय कार्यालय बिलासपुर	04
03	क्षेत्रीय कार्यालय रायगढ़	01
04	क्षेत्रीय कार्यालय कोरबा	—
05	क्षेत्रीय कार्यालय भिलाई–दुर्ग	01
06	क्षेत्रीय कार्यालय अम्बिकापुर	—
07	क्षेत्रीय कार्यालय जगदलपुर	—
	कुल	09

3. राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता प्रबोधन कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश के तीन प्रमुख शहरों रायपुर, कोरबा, बिलासपुर एवं दुर्ग–भिलाई में परिवेशीय वायु मॉनिटरिंग की जाती है।

1 जनवरी 2013 से 31 दिसम्बर 2013 तक विश्लेषित नमूनों की संख्या

क्र.	क्षेत्रीय कार्यालय का नाम	एस.पी.एम.	आर.एस.पी.एम.	सल्फर डाई ऑक्साइड	नाइट्रोजन ऑक्साइड
1.	क्षेत्रीय कार्यालय भिलाई –दुर्ग	692	692	1384	1384
2.	क्षेत्रीय कार्यालय बिलासपुर	241	195	455	455
3.	क्षेत्रीय कार्यालय कोरबा	217	—	434	434
4.	क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर	195	195	276	276
	कुल	1345	1082	2549	2549

4. उद्योगों की चिमनियों के उत्सर्जन एवं परिवेशीय वायु गुणवत्ता की मॉनिटरिंग

औद्योगिक गतिविधियों के फलस्वरूप वायु प्रदूषण की स्थिति पर सतत् निगरानी रखने हेतु उद्योगों की चिमनियों से होने वाले उत्सर्जन एवं परिवेशीय वायु गुणवत्ता की मॉनिटरिंग की जाती है।

1 जनवरी 2013 से 31 दिसम्बर 2013 तक उद्योगों की चिमनियों एवं परिवेशीय वायु के नमूनों की संख्या

क्र.	क्षेत्रीय कार्यालय का नाम	स्टेक मॉनिटरिंग की संख्या	एंबीएन्ट एयर मॉनीटरिंग की संख्या
1.	क्षेत्रीय कार्यालय भिलाई –दुर्ग	205	149
2.	क्षेत्रीय कार्यालय, बिलासपुर	122	149
3.	क्षेत्रीय कार्यालय, जगदलपुर	11	82
4.	क्षेत्रीय कार्यालय, अंबिकापुर	03	38
5.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोरबा	181	144
6.	क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर	219	30
7.	क्षेत्रीय कार्यालय, रायगढ़	128	75
	कुल	869	667

5. भारतीय राष्ट्रीय जल संसाधन प्रबोधन कार्यक्रम (मीनार्स)

इसके अंतर्गत प्रमुख प्राकृतिक जल स्त्रोतों की गुणवत्ता पर निगरानी रखी जाती है।

1 जनवरी 2013 से 31 दिसम्बर 2013 तक नमूनों की संख्या

क्र.	क्षेत्रीय कार्यालय का नाम	नमूनों की संख्या
1.	क्षेत्रीय कार्यालय भिलाई –दुर्ग	98
2.	क्षेत्रीय कार्यालय बिलासपुर	44
3.	क्षेत्रीय कार्यालय जगदलपुर	08
4.	क्षेत्रीय कार्यालय कोरबा	49
5.	क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर	44
6.	क्षेत्रीय कार्यालय रायगढ़	36
	कुल	279

6. अन्य प्राकृतिक जल स्त्रोतों की मॉनिटरिंग

मीनार्स कार्यक्रम के अतिरिक्त बोर्ड द्वारा स्वयं के वित्तीय व्यय से सभी प्रमुख नदियों तथा उनकी सहायक नदियों एवं मुख्य झीलों, बांधों तथा तालाबों के जल गुणवत्ता

1 जनवरी 2013 से 31 दिसम्बर 2013 तक नमूनों की संख्या

क्र.	क्षेत्रीय कार्यालय का नाम	नमूनों की संख्या
1.	क्षेत्रीय कार्यालय भिलाई –दुर्ग	187
2.	क्षेत्रीय कार्यालय बिलासपुर	88
3.	क्षेत्रीय कार्यालय जगदलपुर	110
4.	क्षेत्रीय कार्यालय कोरबा	218
5.	क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर	93
6.	क्षेत्रीय कार्यालय रायगढ़	59
7.	क्षेत्रीय कार्यालय, अंबिकापुर	61
	कुल	816

7. औद्योगिक दूषित जल स्त्रोतों की मॉनिटरिंग

मंडल द्वारा उद्योगों से उत्पन्न दूषित जल की गुणवत्ता मॉनिटरिंग का कार्य किया जाता है।

1 जनवरी 2013 से 31 दिसम्बर 2013 तक नमूनों की संख्या

क्र.	क्षेत्रीय कार्यालय का नाम	नमूनों की संख्या
1.	क्षेत्रीय कार्यालय भिलाई –दुर्ग	107
2.	क्षेत्रीय कार्यालय बिलासपुर	76
3.	क्षेत्रीय कार्यालय जगदलपुर	38
4.	क्षेत्रीय कार्यालय कोरबा	70
5.	क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर	27
6.	क्षेत्रीय कार्यालय रायगढ़	20
7.	क्षेत्रीय कार्यालय, अंबिकापुर	111
	कुल	449

Raipur wins quiz competition

उद्योगों की स्थापना व संचालन के लिए मिलेगी ऑन लाइन सहमति

छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल की नई पहल

पर्यावरण संरक्षण में बने सहभागी

नवास पर दिखी पर्यावरण की चिंता

पर्यावरण संरक्षण में लोगों की भूमिका महत्वपूर्ण : मूणत

बच्चों ने समझाया पर्यावरण संतुलन का महत्व

'कठोर कानून की जरूरत'

जैव विविधता कार्यशाला पर जुटे प्रदेश भर के विद्यार्थी

■ छग पर्यावरण संरक्षण मंडल का आयोजन

स्वयं जागेंगे तभी सुधरेगा पर्यावरण

उद्योगपतियों की समस्याओं का निपटारा होगा ऑनलाइन

वेस्ट मैनेजमेंट पर बनानी होगी नीति

सभी जिम्मेदार

Environment protection work be made habit: Baijendra

Develop culture of environment safety among children: Munat

Now, C'garh Environment Board goes on-line

घर से शुरू हो पर्यावरण संरक्षण

संरक्षक एवं अध्यक्ष	संपादक	संयोजन
एन. बैजेन्द्र कुमार	देवेन्द्र सिंह, सदस्य सचिव	अमर प्रकाश सावंत, सहायक जनसम्पर्क अधिकारी
छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल	छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल	छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल
web-enviscecb.org	e-mail-hocecb@gmail.com	Phone - 0771-2970070

प्रकाशक : पर्यावरण सूचना केंद्र, छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मंडल, कबीर नगर, रायपुर (छ.ग.)

आकल्पन : इम्प्रेसिव, एडवर्टइजिंग सर्विस, **मुद्रण** : महावीर ऑफसेट